माहराजा पृथ्वी राज चौहान

इनकी शूरवीरता जितनी प्रसिद्ध थी उतनी ही इनकी उदारता भी जो इनकी मृत्यु कारण बनी। इनके कवि मित्र चंदवरदाई द्वारा लिखित 'पृथ्वीराज रासो' के अनुसार मोहम्मद गोरी इनके हाथों **17** बार हारा और हर बार वह अपने मुँह में घास ड़ाल कर जमीन पर नाक रगड़ कर आपकी गाय हुँ कह कर माफ कर दिया जाता और वही निर्लज्ज आक्रमण कारी **18** वीं बार फिर आकर इनको घेरता है और ये हार जाते है।हारने के कारण दो थे ये लगातार गोरी पर जीत हासिल करते रहे और तो आसपास के राजाओं को भी हराते रहे तो अभिमानी हो गये। सब इनसे बदला लेना चाहते थे। दूसरा कारण संयुक्ता थी ये **24** वर्ष के नवयुवक थे उसके प्यार व भोग बिलास में राज पाट के कामों से दूर रहने लगे थे। गौरी हरा देता है और बंदी बनाकर काबुक ले जाता है वहॉ वीरता से मृत्यु हो जाती है।

दूसरा इतिहास मिलता है गौरी अपने बड़े भाई गज़नी की सलाह व मदद से पृथ्वी राज पर आक्रमण करता है युद्व तरारी के मैदान में जो हरियाना के सिरसा में है सन **1091** में होता है वहॉ वो हार जाता है और फिर छोड़ दिया जाता है। कुल एक साल बाद गज़नी ने एक लाख बीस हजार की फौज़ लेकर फिर लड़ने आ धमकता है इस बार उसे फतैह हासिल होती है और पृथ्वीराज इस लड़ाई में मार काट दिया जाता है।